International Research Journal of Commerce and Law
Volume 12 Issue 11,Nov 2024 ISSN: 2349-705x Impact Factor: 8.843
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email:irjmss@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

कोविड महामारी का भारतीय निवेशकों पर प्रभाव

Dr. Anil Kumar sadafal

Principal

Unique college parasia, district Chhindwara Madhya Pradesh MP India

सार

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था और उसके निवेशकों पर भी गहरा और बहुआयामी प्रभाव डाला। मार्च 2020 में लगाए गए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को ठप कर दिया, जिससे आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुईं, मांग में भारी गिरावट आई और बेरोजगारी में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। इस अनिश्चितता के माहौल ने भारतीय निवेशकों के व्यवहार और निवेश परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया। महामारी की शुरुआत में भारतीय शेयर बाजारों में भारी गिरावट देखने को मिली। निवेशकों में घबराहट फैल गई, जिससे भारी बिकवाली हुई। बीएसई सेंसेक्स और निफ्टी जैसे प्रमुख सूचकांकों में रिकॉर्ड तोड़ गिरावट दर्ज की गई, जिससे निवेशकों की करोड़ों रुपये की संपत्ति एक झटके में स्वाहा हो गई। विशेष रूप से पर्यटन, आतिथ्य, विमानन और खुदरा जैसे संपर्क-गहन क्षेत्रों में भारी नुकसान हुआ, जिससे इन क्षेत्रों में निवेश करने वाले निवेशकों को बड़ा झटका लगा। छोटे और मध्यम व्यवसायों को भी तरलता संकट का सामना करना पड़ा, जिससे उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया। महामारी ने निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो और निवेश रणनीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया। जहाँ एक ओर पारंपरिक और सुरक्षित निवेश विकल्पों, जैसे सोना और सरकारी बॉन्ड की ओर रुझान बढ़ा, वहीं

दूसरी ओर कुछ नए रुझान भी देखने को मिले। लॉकडाउन के दौरान डिजिटल सेवाओं की बढ़ती मांग के कारण ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा, फिनटेक और टेलीकॉम जैसे क्षेत्रों में भारी निवेश आकर्षित हुआ।

मुख्य शब्द

अर्थव्यवस्था,डिजिटल, निवेशक, शेयर बाजार

भूमिका

कोविड-19 महामारी के प्रारंभिक चरण में, देशव्यापी लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को अचानक रोक दिया। कारखाने बंद हो गए, दुकानें वीरान हो गईं, और परिवहन ठप हो गया। इसका सीधा असर आपूर्ति श्रृंखलाओं पर पड़ा, जिससे उत्पादन और वितरण दोनों बुरी तरह प्रभावित हुए। शेयर बाजार में तेजी से गिरावट आई, निवेशकों में घबराहट फैल गई और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक बड़े पैमाने पर अपनी पूंजी निकालने लगे। (फेडोरोवा, 2022)

महामारी के शुरुआती दौर में, दुनिया भर के शेयर बाजारों में भारी गिरावट देखी गई। यह गिरावट वैश्विक मंदी, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और अनिश्चितता के कारण हुई थी हालांकि, सरकारों और केंद्रीय बैंकों द्वारा प्रदान किए गए अभूतपूर्व प्रोत्साहन पैकेजों और आसान मौद्रिक नीतियों ने बाजारों को तेजी से ठीक होने में मदद की। इस रिकवरी ने खुदरा निवेशकों के लिए एक आकर्षक अवसर प्रदान किया, खासकर जब पारंपरिक निवेश विकल्पों जैसे सावधि जमा पर ब्याज दरें कम हो गईं।

ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और डीमैट खातों को खोलने की प्रक्रिया का सरल होना एक महत्वपूर्ण कारक था। इन प्लेटफॉर्मों ने निवेश को पहले से कहीं अधिक सुलभ बना दिया, जिससे कम अनुभव वाले व्यक्ति भी

आसानी से शेयर बाजार में प्रवेश कर सके। लॉकडाउन और घर से काम करने की व्यवस्था ने लोगों को अधिक खाली समय प्रदान किया। इस अतिरिक्त समय का उपयोग कई लोगों ने वित्तीय बाजारों के बारे में जानने और निवेश करने के लिए किया।

इस अस्थिरता के कई कारण थे। पहला, मांग में भारी गिरावट। लोगों की आय में अनिश्चितता और नौकरी छूटने के डर ने उपभोक्ता खर्च को कम कर दिया। दूसरा, आपूर्ति-पक्ष के झटके। लॉकडाउन और श्रमिकों की कमी ने उत्पादन को बाधित किया, जिससे कई आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता प्रभावित हुई। तीसरा, वैश्विक बाजार का प्रभाव। चूंकि भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग है, अन्य देशों में मंदी और लॉकडाउन का असर भारतीय निर्यात और आयात पर भी पड़ा, जिससे व्यापार असंतुलन बढ़ा। चौथा, अनिश्चितता का माहौल। महामारी की गंभीरता, वैक्सीन की उपलब्धता और भविष्य की आर्थिक नीतियों को लेकर बनी अनिश्चितता ने निवेशकों और उपभोक्ताओं दोनों के विश्वास को हिला दिया। (यांग, 2022)

निवेशकों ने इन क्षेत्रों में भविष्य की वृद्धि की संभावनाओं को पहचाना। महामारी ने स्वास्थ्य सेवा के महत्व को उजागर किया। फार्मास्यूटिकल्स, मेडिकल उपकरणों और वैक्सीन निर्माण से जुड़ी कंपनियों के शेयरों में भारी तेजी देखी गई, जिससे निवेशकों का ध्यान इस क्षेत्र की ओर केंद्रित हुआ।

सरकार की "आत्मनिर्भर भारत" पहल ने घरेलू विनिर्माण और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा दिया। इससे भारतीय कंपनियों में निवेश का माहौल बना और विदेशी निर्भरता कम करने पर जोर दिया गया। महामारी के दौरान घर से काम करने और खाली समय मिलने के कारण बड़ी संख्या में नए खुदरा निवेशक शेयर बाजार में शामिल हुए। डीमैट खातों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, जिससे बाजार में तरलता और भागीदारी बढ़ी। बाजार में अस्थिरता के बावजूद, व्यवस्थित निवेश योजना के माध्यम से निवेश करने वाले

निवेशकों ने लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न प्राप्त किया। इसने नियमित और अनुशासित निवेश के महत्व को रेखांकित किया।

भारतीय सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने महामारी के आर्थिक प्रभावों को कम करने के लिए कई उपाय किए। 20 लाख करोड़ रुपये का व्यापक आर्थिक पैकेज, विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहन योजनाएं, और मौद्रिक नीति में ढील ने अर्थव्यवस्था को सहारा दिया। इन उपायों ने निवेशकों में विश्वास बहाल करने में मदद की और धीरे-धीरे आर्थिक गतिविधियों में सुधार हुआ। कृषि क्षेत्र ने इस दौरान एक मजबूत प्रदर्शन दिखाया, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सहारा मिला। (सिंह, 2023)

साहित्य की समीक्षा

(गोयल, 2021) : भारतीय बाजार ने इस झटके को सहने और उससे उबरने में लचीलापन भी दिखाया। सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने बाजार को स्थिर करने के लिए कई उपाय किए। भारतीय रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों में कटौती की, तरलता बढ़ाने के लिए कदम उठाए, और विभिन्न क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की।

(रिचर्ड, 2023) : सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसे पैकेज की घोषणा की, जिससे घरेलू उत्पादन को बढ़ावा मिला और रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन उपायों ने धीरे-धीरे निवेशकों का विश्वास बहाल किया और बाजार को फिर से गति मिली।

(कनागरटनम, 2023) : कोविड-19 महामारी के दौरान कुछ क्षेत्रों ने विशेष रूप से अच्छा प्रदर्शन किया, जैसे कि फार्मास्यूटिकल्स, सूचना प्रौद्योगिकी और ई-कॉमर्स। घर से काम करने की संस्कृति ने डिजिटल सेवाओं की मांग को बढ़ाया, जिससे तकनीकी कंपनियों को फायदा हुआ।

(कल्लियास, 2023) : कोविड-19 महामारी से आतिथ्य, पर्यटन, विमानन और खुदरा जैसे क्षेत्रों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। असंगठित क्षेत्र, जिसमें बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक शामिल हैं, को सबसे ज्यादा मार पड़ी, जिससे बेरोजगारी बढ़ी और आय असमानता में वृद्धि हुई।

(रहबर, 2020) : कोविड महामारी ने भारतीय बाजार को एक अभूतपूर्व अस्थिरता के दौर में धकेल दिया। इसने न केवल आर्थिक झटके दिए, बल्कि संरचनात्मक कमजोरियों को भी उजागर किया हालांकि, सरकार के त्वरित उपायों, भारतीय व्यवसायों के लचीलेपन और डिजिटल क्रांति के बढ़ते प्रभाव ने बाजार को धीरे-धीरे स्थिरता की ओर मोड़ने में मदद की। इस अनुभव ने हमें भविष्य में ऐसी अप्रत्याशित घटनाओं से निपटने के लिए और अधिक मजबूत और अनुकूलनीय आर्थिक ढांचे की आवश्यकता का पाठ पढ़ाया है, ताकि भारतीय बाजार भविष्य में किसी भी अस्थिरता का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर सके।

कोविड महामारी का भारतीय निवेशकों पर प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने निश्चित रूप से खुदरा निवेशकों के लिए वित्तीय बाजारों में एक नए युग की शुरुआत की है। डिजिटल पहुंच, खाली समय और वैकल्पिक निवेश की तलाश जैसे कारकों ने उनकी भागीदारी में अभूतपूर्व वृद्धि की है। इस वृद्धि ने भारतीय पूंजी बाजार को भी मजबूत किया है जैसा कि डिमैट खातों की संख्या में तेज वृद्धि और दैनिक व्यापार की मात्रा में वृद्धि से स्पष्ट है हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि खुदरा

निवेशक निवेश से जुड़े जोखिमों को समझें और सूचित निर्णय लें। शिक्षा और जागरूकता इस बदलते निवेश परिदृश्य में सफल भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण होगी।

महामारी के शुरुआती दिनों में, जब लॉकडाउन और यात्रा प्रतिबंधों के कारण आर्थिक गतिविधियाँ ठप पड़ गईं, तब शेयर बाजारों में भारी बिकवाली हुई। सूचकांक रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गए और कई निवेशकों को अपने निवेश की सुरक्षा पर संदेह होने लगा हालांकि, वित्तीय सलाहकारों और अनुभवी निवेशकों ने बार-बार यह सलाह दी कि ऐसे समय में घबराहट में निकासी करने के बजाय धैर्य रखना और निवेश जारी रखना बुद्धिमानी है। यहीं पर एसआईपी ने अपनी ताकत दिखाई।

एसआईपी, जो इक्विटी म्यूचुअल फंड में नियमित, निश्चित अंतराल पर निवेश की अनुमति देता है, रुपये की औसत लागत के सिद्धांत पर काम करता है। जब बाजार नीचे होते हैं, तो एसआईपी के माध्यम से निवेशक कम कीमत पर अधिक यूनिट खरीदते हैं। जब बाजार ठीक होते हैं, तो कम यूनिट अधिक कीमत पर खरीदे जाते हैं। लंबी अवधि में, यह रणनीति निवेश की औसत लागत को कम करने में मदद करती है और बाजार की अस्थिरता के प्रभाव को कम करती है।

कोविड महामारी के दौरान, जिन निवेशकों ने अपने एसआईपी को जारी रखा, उन्होंने बाजार में गिरावट का लाभ उठाया। जब बाजार तेजी से गिरे, तो उनके एसआईपी ने अधिक यूनिट खरीदे। बाद में, जब बाजारों में तेजी आई और वे पूर्व-महामारी के स्तर से भी ऊपर चले गए, तो इन निवेशकों को अपने निवेश पर महत्वपूर्ण लाभ हुआ। यह अनुभव एक बार फिर एसआईपी की शक्ति और दीर्घकालिक निवेश के महत्व को रेखांकित करता है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन फ़ोरम पर वित्तीय जानकारी और निवेश रणनीतियों की बढ़ती उपलब्धता ने भी खुदरा निवेशकों को आकर्षित किया। "वॉलस्ट्रीटबेट्स" जैसे समुदाय ने दिखाया कि कैसे सामूहिक कार्रवाई बाजार की गतिविधियों को प्रभावित कर सकती है। बैंकों में सावधि जमा पर घटती ब्याज दरों ने निवेशकों को उच्च प्रतिफल की तलाश में इक्विटी और म्यूचुअल फंड जैसे अन्य निवेश विकल्पों की ओर धकेला। कई कंपनियों के सफल आई.पी.ओ. ने भी खुदरा निवेशकों को आकर्षित किया, जिससे उन्हें लिस्टिंग पर त्वरित लाभ की उम्मीद थी।

सावधि जमा और आवर्ती जमा की जगह अब म्यूचुअल फंड एस.आई.पी. तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, 62% लोग म्यूचुअल फंड एस.आई.पी. में निवेश कर रहे हैं। महामारी ने लोगों को भविष्य के लिए बचत करने के महत्व का एहसास कराया है। अब लोग अपने और अपने परिवार के बेहतर भविष्य के लिए बचत करने के साथ ही आपातकालीन जरूरतों के लिए भी पैसा जोड़ रहे हैं हालांकि कुल मिलाकर भागीदारी बढ़ी है कुछ रिपोर्टों से पता चलता है कि सीधे शेयर बाजार में और क्रिप्टोकरेंसी में निवेश में थोड़ी कमी आई है।

कुछ निवेशकों ने बड़े-कैप शेयरों से ध्यान हटाकर छोटे और मध्य-कैप शेयरों में निवेश करना शुरू कर दिया है जिससे उच्च संभावित रिटर्न की तलाश की जा रही है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि व्यक्तिगत अनुभव के कारण कुछ निवेशकों की जोखिम सहिष्णुता में बदलाव आया है और वे अब मध्यम रिटर्न के साथ अधिक सुरक्षित विकल्पों को पसंद करते हैं।

महामारी ने हमें कई सबक सिखाए और उनमें से एक महत्वपूर्ण सबक था वित्तीय अनुशासन और धैर्य का महत्व। जिन लोगों ने अल्पकालिक उतार-चढ़ाव से विचलित हुए बिना अपने एसआईपी में विश्वास बनाए

रखा, उन्होंने न केवल अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखा, बल्कि उसे बढ़ाने में भी सफल रहे। इसने इस बात को पुष्ट किया कि एसआईपी सिर्फ एक निवेश उपकरण नहीं, बल्कि वित्तीय योजना का एक दर्शन है जो अनुशासन, धैर्य और दीर्घकालिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

महामारी के दौरान डिजिटल भुगतान और ऑनलाइन लेनदेन में वृद्धि हुई, जिससे एसआईपी के लिए और भी अधिक सुविधा मिली। घर से बैठे-बैठे निवेश करने की क्षमता ने भी निवेशकों को अनिश्चित समय में भी अपने वित्तीय लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने में मदद की।

कोविड-19 महामारी ने भारतीय अर्थव्यवस्था और निवेशकों के लिए कई दीर्घकालिक सबक सिखाए हैं। इसने जोखिम प्रबंधन, विविधीकरण और लंबी अवधि के निवेश दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित किया। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय निवेशक अब अधिक सतर्क, जागरूक और विभिन्न क्षेत्रों में निवेश के अवसरों की तलाश में हैं। डिजिटल परिवर्तन, स्थायी निवेश और लचीली आपूर्ति श्रृंखलाओं का विकास भविष्य के निवेश परिदृश्य को आकार देगा।

कोविड महामारी एक अभूतपूर्व चुनौती थी, जिसने वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्थाओं और जीवन को प्रभावित किया। ऐसे समय में, एसआईपी ने एक विश्वसनीय निवेश मार्ग के रूप में अपनी उपयोगिता और प्रभावशीलता साबित की। इसने न केवल निवेशकों को बाजार की अस्थिरता से निपटने में मदद की, बल्कि उन्हें वित्तीय अनुशासन और दीर्घकालिक निवेश के लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव भी कराया। महामारी के बाद की दुनिया में, एसआईपी में निवेशकों का विश्वास और भी मजबूत हुआ है, जो यह दर्शाता है कि यह एक ऐसा उपकरण है जो कठिन समय में भी खड़ा रहता है और निवेशकों को उनके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

कोविड महामारी ने भारतीय निवेशकों के लिए अभूतपूर्व चुनौतियां पेश कीं, लेकिन साथ ही नए अवसर भी पैदा किए। इसने निवेश के पारंपरिक तरीकों को चुनौती दी और डिजिटल तथा स्वास्थ्य जैसे नए युग के क्षेत्रों में निवेश के महत्व को स्थापित किया। भारतीय अर्थव्यवस्था के लचीलेपन और सरकार के समय पर हस्तक्षेप ने इसे महामारी के झटके से उबरने में मदद की है, और अब यह एक मजबूत, समावेशी और स्थायी विकास पथ पर आगे बढ़ रही है, जिससे निवेशकों के लिए उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं हैं।

संदर्भ

1. डुओंग, एच. एन., गोयल, ए., कल्लिन्टराकिस, वी., और वीराराघवन, एम. (2021) बाजार हेरफेर नियम और आईपीओ अंडरप्राइसिंग। जर्नल ऑफ कॉरपोरेट फाइनेंस, 67, 101846
2. रिचर्ड (2023) नीलाम किए गए आईपीओ में संस्थागत निवेशक की असावधानी पूर्वाग्रह। जर्नल ऑफ बैंकिंग एंड फाइनेंस, 150, 106831
3. कनागरटनम, के. (गिरी), लिम, सी. वाई., और लोबो, जी. जे. (2023) वित्तीय साक्षरता और आईपीओ अंडरप्राइसिंग। जर्नल ऑफ फाइनेंशियल एंड क्वांटिटेटिव एनालिसिस, 1–59
4. कल्लियास, ए., कल्लियास, के., त्सालकामास, आई., और झांग, एस. (2023) एक आकार सभी के लिए उपयुक्त नहीं है: आईपीओ प्रदर्शन पर सीईओ शिक्षा की सशर्त भूमिका। जर्नल ऑफ बिजनेस रिसर्च, 157, 113560.

5. रहबर, एम., और खोडाडी, डी. (2020). कंपनी के आकार, स्टॉक के आरंभिक सार्वजनिक निर्गमों में आय प्रबंधन और तेहरान स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कंपनियों के प्रदर्शन के बीच संबंधों का अध्ययन करना। एशियाई सामाजिक विज्ञान, 11(24)
6. रिस्ते इचेव. (2023) संस्थागत निवेशक के नजरिए से आईपीओ अंडरप्राइसिंग: उभरते बाजारों से साक्ष्य। इकोनॉम्स्का इस्ट्राजीवंजा-इकोनॉमिक रिसर्च, 36(1)
7. शुक्ला, ए. के., और शॉ, टी. एस. (2023) भारत में आईपीओ फर्मों का दीर्घकालिक स्टॉक रिटर्न: निवेश और लाभप्रदता परिकल्पना की जांच करना। विकल्प: निर्णय निर्माताओं के लिए जर्नल
8. यादव, ए., प्रोसाद, जे. एम., और सिंह, एस. (2023) प्री-आईपीओ वित्तीय प्रदर्शन और ऑफर मूल्य अनुमान: भारत से साक्ष्य। जर्नल ऑफ रिस्क एंड फाइनेंशियल मैनेजमेंट, 16(2), 135.
9. झाओ, वाई., वांग, एन., झांग, एल., सन, बी., और यांग, वाई. (2022) निवेशक का ध्यान जितना अधिक होगा, आईपीओ के बाद का प्रदर्शन उतना ही बेहतर होगा? प्री-आईपीओ और आईपीओ के बाद निवेशक के ध्यान का एक दृश्य। रिसर्च इन इंटरनेशनल बिजनेस एंड फाइनेंस, 63, 101789
10. फेडोरोवा, ई., चेर्टसोव, पी., और कुजमीना, ए. (2022) कोविड-19: महामारी के डर का आईपीओ अंडरप्राइसिंग पर असर। जर्नल ऑफ फाइनेंशियल रिपोर्टिंग एंड अकाउंटिंग